Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January-2025 | Page 06-12

सत्य, संयम और समाज: सत्य निज नाम संस्थान की भूमिका

[1]लक्ष्मीन महंत, [2]डॉ.अजय कुमार शुक्ल
[1]शोध छात्र, [2]प्राध्यापक- हिन्दी
[1,2]कलिंगा विश्वविद्यालय नया रायपुर (छ.ग.)
[2]ajay.shukla@kalingauniversity.ac.in

शोध सार-

भारतीय चिंतन परंपरा में सत्य और संयम केवल नैतिक मूल्य नहीं, बल्कि सामाजिक संतुलन और मानव विकास के आधार स्तंभ रहे हैं। आधुनिक उपभोक्तावादी समाज में इन मूल्यों का क्षरण स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। ऐसे समय में 'सत्य निज नाम संस्थान' जैसे संस्थान सामाजिक चेतना, नैतिक पुनर्जागरण और मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। यह शोधपत्र सत्य, संयम और समाज के आपसी संबंधों का विश्लेषण करते हुए 'सत्य निज नाम संस्थान' की वैचारिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक भूमिका का सम्यक मूल्यांकन प्रस्तुत करता है।

बीज बिन्दु -

सत्य, संयम, समाज, नैतिकता, सत्य निज नाम संस्थान

भूमिका -

वर्तमान सामाजिक परिवेश तीव्र परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है, जहां भौतिकता की प्रधानता के कारण नैतिक मूल्यों का क्षरण स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।सत्य और संयम जैसे मानवीय गुण जो किसी भी सुसंस्कृत समाज की आधारशिला माने जाते हैं, आज उपेक्षा के शिकार होते जा रहे हैं।

असत्य, नशा, हिंसा तथा अनैतिक आचरण समाज में असंतुलन और विघटन की स्थिति उत्पन्न कर रहे हैं, जिससे सामाजिक समरसता प्रभावित हो रही है।कबीर, नानक, रविदास जैसे अनेक संतों ने सत्य को आत्मबोध और सामाजिक कल्याण का साधन माना है, वही संयम को व्यक्ति के आचरण को मर्यादित करने वाला आधार तत्व बताया गया है। सत्य और संयम के अभाव में समाज केवल भौतिक उन्नति तक सीमित रह जाता है, जबकि नैतिक और आध्यात्मिक विकास का अवरोध हो जाता है।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January-2025 | Page 06-12

भारतीय सामाजिक परंपरा में सत्य और संयम को जीवन के मूल मूल्य के रूप में स्वीकार किया गया है। सत्य जहाँ व्यक्ति को नैतिक दृढ़ता प्रदान करता है, वहीं संयम उसे आत्मनियंत्रण एवं संतुलित जीवन की ओर अग्रसर करता है। इन दोनों मूल्यों के अभाव में समाज में असंतुलन, हिंसा, नशा, नैतिक पतन और सामाजिक विघटन जैसी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।आधुनिक समय में भौतिकता की बढ़ती प्रवृत्ति ने मानव जीवन को सुविधापरक तो बनाया है, किंतु इसके साथ ही सत्यनिष्ठा एवं आत्मसंयम जैसे मूल तत्व कमजोर होते गए हैं। परिणामस्वरूप सामाजिक संबंधों में तनाव, असहिष्णुता तथा मूल्य-विस्थापन की स्थिति स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। ऐसे परिवेश में सत्य और संयम पर आधारित सामाजिक चेतना की आवश्यकता और अधिक प्रासंगिक हो जाती है।

प्रस्तुत शोध पत्र में सत्य और संयम को धारण करते हुए समाज को बेहतर कैसे बनाया जा सकता है और इस दिशा में छत्तीसगढ़ के सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक और वैचारिक संगठन सत्य निज नाम संगठन की क्या भूमिका है?यह शोध पत्र "सत्य, संयम और समाज के संदर्भ में सत्य निज नाम संस्थान की भूमिका" का विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जिससे यह स्पष्ट किया जा सके कि किस प्रकार आध्यात्मिक मूल्यों पर आधारित संस्थागत प्रयास समाज के नैतिक पुनर्निर्माण में योगदान दे सकते है ।सकारात्मक परिवर्तन लाने की दिशा में सत्य निज नाम संस्था की क्या भूमिका है? इस विषय पर प्रकाश डाला गया है।

उद्देश्य -

हिन्दी साहित्य की भक्तिकालीन परंपरा में सत्य और संयम के महत्व का विशेष महत्व रहा है।आदिकाल से लेकर वर्तमान समय तक साहित्यकारों ने सत्य और संयम के माध्यम से सामाजिक बदलाव लाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। वर्तमान समय में उसी वैचारिक परंपरा को आगे बढ़ाने वाली सत्यनाम निज संस्थान की भूमिका को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य सत्य संयम और समाज के पारस्परिक संबंधों का अध्ययन करते हुए सत्य निज नाम संस्थान के वैचारिक एवं सामाजिक भूमिका का विश्लेषण करना है, यह अध्ययन न केवल सामाजिक सुधार की दिशा में संस्थान के योगदान को रेखांकित करेगा बल्कि आधुनिक समाज में सत्य और संयम की प्रासंगिकता को भी स्पष्ट करेगा।

सत्य निज नाम संस्थान का परिचय -

सत्य निज नाम संस्थान मुख्य रूप से सद्गुरुदेव सत्य कबड्डीदास जी और माता लीलावती के

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January-2025 | Page 06-12

सानिध्य में आध्यात्मिक व धार्मिक गतिविधियों का संचालन करता है। यह संस्था छत्तीसगढ़, विशेषकर जांजगीर-चांपा क्षेत्र में वार्षिक सम्मेलनों के माध्यम से सत्य निज नाम की शक्ति और आध्यात्मिक संदेश का प्रचार-प्रसार करती है।

इसके संस्थापक परम पूज्य सत्य गुरुदेव कबड्डी दास जी हैं, जिन्होंने वर्ष 1997 में इस संस्थान की स्थापना की है।यह संस्थान निज स्वरूप, सत्य दर्शन, सत्य निष्ठा, एवं संयम को जीवन पद्धति के रूप में स्थापित करने का प्रयास करता है। छत्तीसगढ़ में विशेषतौर से पोड़ी राछा तहसील नवागढ़, जिला जांजगीर-चांपा क्षेत्र में यह संस्थान निरंतर रुप से सामाजिक सुधार एवं नैतिक जागरण का कार्य कर रही है।

इस संस्थान की प्रमुख प्रासंगिकता नशा मुक्ति अभियान में भी दिखाई देती है।विदित हो कि वर्तमान समाज में नशा केवल व्यक्तिगत समस्या न होकर सामाजिक विघटन का कारण बन चुकी है। इसीलिए सत्य निज नाम संस्थान नशा त्याग को केवल नियम के रूप में नहीं बल्कि आत्मिक जागरण और नैतिक चेतना के माध्यम से प्रस्तुत करती है, जिससे व्यक्ति के व्यवहार में स्थाई परिवर्तन संभव होता है।

इस संस्थान के द्वारा लोगों को बुरी आदतों के त्याग के लिए प्रेरित करते हुए सत्यनिष्ठ आचरण पर बल देता है। संगठन के द्वारा संयमित आचरण, अहिंसा एवं मानव मूल्यों के प्रति जागरूक किया जाता है ।यह कार्य केवल प्रवचन तक सीमित न होकर सामूहिक साधना, सत्संग और व्यावहारिक मार्गदर्शन के माध्यम से संपन्न किया है।जिससे समाज के विभिन्न वर्गों में सकारात्मक सोच का विकास होता है।

समाज में बढ़ती नैतिक शिथिलता के दौर में यह संस्थान आध्यात्मिकता को सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य करता है। जिससे यह सिद्ध होता है कि अध्यात्म केवल व्यक्तिगत मोक्ष का साधन नहीं बल्कि सामाजिक संतुलन एवं सुधार का प्रभावी माध्यम भी है।सत्य निज नाम संस्थान का यह दृष्टिकोण इसे एक आध्यात्मिक सामाजिक सुधार संस्था के रूप में विशिष्ट बनाता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि सत्य संयम और समाज के संदर्भ में सत्य निज नाम संस्थान की भूमिका अत्यंत प्रासंगिक है। यह संस्थान न केवल व्यक्ति के आचरण में परिवर्तन लाने का प्रयास करता है बल्कि एक सत्यनिष्ठ और नशा मुक्त समाज के निर्माण की दिशा में सार्थक

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January-2025 | Page 06-12

योगदान देता है। इस कारण इसका अध्ययन सामाजिक आध्यात्मिक शोध के क्षेत्र में विशेष महत्व रखता है।

सत्य निज नाम संस्थान समाज में नैतिक पुनर्जागरण की दिशा में सक्रिय भूमिका निभा रहा है। यह संस्थान सत्य,संयम और सदाचार पर आधारित जीवन पद्धति को जनसामान्य तक पहुंचाने का प्रयास करता है। जिससे यह नैतिक एवं आध्यात्मिक दिशा प्रदान करने वाला एक महत्वपूर्ण वैचारिक आंदोलन के रूप में उभरता है।

यह संस्थान सत्य, संयम, सदाचार और सेवा को जीवन-व्यवहार में उतारने पर बल देता है। इसके माध्यम से व्यक्ति को नशामुक्ति, अहिंसा, समता और आत्मचिंतन की ओर प्रेरित किया जाता है, जिससे सामाजिक सुधार की प्रक्रिया सशक्त होती है। सत्य निज नाम संस्थान की भूमिका केवल आध्यात्मिक शिक्षा तक सीमित न होकर सामाजिक समरसता, नैतिक जागरूकता और मानव मूल्यों के संरक्षण से भी जुड़ी हुई है। संस्थान द्वारा संचालित गतिविधियाँ समाज में अनुशासन, सहयोग और जिम्मेदारी की भावना को विकसित करने में सहायक सिद्ध होती हैं

सत्य की अवधारणा -

भारतीय दार्शनिक परंपरा में 'सत्य' को केवल कथन की सत्यता तक सीमित नहीं माना गया है, बल्कि इसे जीवन-पद्धति के रूप में स्वीकार किया गया है। सत्य वह मूल्य है, जो मनुष्य के विचार, वाणी और कर्म तीनों को एक सूत्र में बाँधता है। जब व्यक्ति जो सोचता है, वही बोलता है और वही आचरण में लाता है, तब सत्य की वास्तविक अभिव्यक्ति होती है।संत परंपरा में सत्य और नाम का विशेष महत्व है,जो आत्मबोध के साथ सर्वबोध का सबसे महत्वपूर्ण साधन है।

संत परंपरा में सत्य को आत्मबोध से जोड़ा गया है। सत्य का अर्थ केवल सामाजिक नियमों का पालन नहीं, बल्कि आत्मिक विवेक की जागृति है। असत्य, छल, नशा और हिंसा मनुष्य को इस आत्मबोध से दूर करते हैं। इसलिए सत्य को केवल नैतिक उपदेश न मानकर जीवन की शुद्ध दिशा माना गया है।कबीर परंपरा में सत्य का स्वरूप सहज है।वह दिखावे, पाखंड और आडंबर से रहित है। सत्य वह है, जो मनुष्य को भीतर से निर्मल बनाए और समाज में समरसता स्थापित करे।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January-2025 | Page 06-12

संयम का तात्विक अर्थ -

संयम का सामान्य अर्थ इंद्रियों पर नियंत्रण माना जाता है, किंतु सामाजिक दर्शन में संयम का अर्थ इससे कहीं व्यापक है। संयम मनुष्य की इच्छाओं, आदतों और उपभोग प्रवृत्ति पर संतुलन स्थापित करने की प्रक्रिया है। जहाँ संयम नहीं होता, वहाँ स्वार्थ, हिंसा और सामाजिक विघटन जन्म लेता है। संयम का संबंध केवल व्यक्तिगत साधना से नहीं, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व से भी है। नशा, मांसाहार और असंयमित जीवन शैली मनुष्य की चेतना को कुंद कर देती है, जिससे उसका सामाजिक व्यवहार भी विकृत हो जाता है। अतः संयम को सामाजिक शुद्धता का आधार कहा जा सकता है। संत परंपरा में संयम को दमन नहीं, बल्कि स्वेच्छा से अपनाया गया अनुशासन माना गया है। यह अनुशासन मनुष्य को स्वतंत्र बनाता है, क्योंकि वह बाहरी लतों और विकारों से मुक्त होता है।

समाज और नैतिक मूल्यों का संबंध -

समाज केवल व्यक्तियों का समूह नहीं होता, बल्कि यह साझा मूल्यों, परंपराओं और आचरण से निर्मित होता है। जब समाज में सत्य और संयम जैसे मूल्यों का क्षरण होता है, तब सामाजिक संरचना कमजोर होने लगती है। बढ़ता नशा, अपराध, पारिवारिक विघटन और पर्यावरण संकट इसी मूल्यहीनता के परिणाम हैं। एक स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए आवश्यक है कि व्यक्ति का नैतिक चरित्र सुदृढ़ हो। सत्य और संयम ऐसे मूल्य हैं, जो व्यक्ति को सामाजिक दायित्वों के प्रति जागरूक बनाते हैं। जब व्यक्ति स्वयं संयमित होता है, तब उसका प्रभाव परिवार और समाज पर स्वतः पड़ता है। इस प्रकार समाज का सुधार केवल कानून या व्यवस्था से संभव नहीं, बल्कि नैतिक चेतना के जागरण से संभव है।

सत्य और संयम का पारस्परिक संबंध -

सत्य और संयम एक-दूसरे से पृथक नहीं हैं। जहाँ सत्य है, वहाँ संयम स्वतः विकसित होता है और जहाँ संयम है, वहाँ सत्य की रक्षा होती है। असंयमित व्यक्ति सत्य को बनाए नहीं रख सकता, क्योंकि उसकी चेतना बाहरी आकर्षणों से प्रभावित रहती है।नशा, हिंसा और भोगवाद सत्य और संयम दोनों के विरोधी तत्व हैं। इसलिए संत परंपरा में इनका निषेध किया गया है। सत्य और संयम का संयुक्त प्रभाव मनुष्य को आत्मकेंद्रितता से निकालकर समाजोन्मुख बनाता है।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January-2025 | Page 06-12

सत्य, संयम और समाज का समन्वय -

जब सत्य और संयम व्यक्तिगत जीवन में स्थापित होते हैं, तब उनका प्रतिफल सामाजिक स्तर पर दिखाई देता है, ऐसा समाज नशा-मुक्त होता है, हिंसा से दूर रहता है, पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनता है, पारस्परिक सहयोग को महत्व देता है, सत्य और संयम आधारित समाज में अनुशासन भय से नहीं, बल्कि विवेक से संचालित होता है। यह समाज बाहरी नियंत्रण की अपेक्षा आंतरिक नैतिकता पर आधारित होता है।

समकालीन संदर्भ में प्रासंगिकता -

वर्तमान समय में जब उपभोक्तावाद, नशा और पर्यावरणीय संकट गहराते जा रहे हैं, पूंजीवाद, तकनीकी विकास और भागती दौड़ती हुयी जिंदगी में मनुष्य के जीवन की शांति भंग हो चुकी है और वह व्ययसनों के प्रति उन्बमुख हो जाता है ,तब सत्य और संयम की अवधारणा और अधिक प्रासंगिक हो जाती है। आधुनिक समाज को केवल तकनीकी और आर्थिक विकास ही नहीं, बल्कि सर्वांगीण विकास की आवश्यकता है।जिससे वह नैतिक विकास कर सकें और एक बेहतर समाज का निर्माण कर सकें तब उन्हें सही दिशा दिखलाने के लिए ऐसे संस्थान बहुत प्रभावी सिद्ध होते हैं।समाज , राष्ट्र को ही नहीं बल्कि विश्व को ऐसे संगठन की बहुत आवश्यकता है जो सच्चे मानव का निर्माण कर सकें।
सत्य और संयम आधारित विचारधारा व्यक्ति को संतुलित, समाज को सशक्त और प्रकृति को सुरक्षित रखने में सहायक होती है। यही कारण है कि संत परंपरा से प्रेरित संस्थाएँ आज भी सामाजिक सुधार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। जिसमें सत्य निज नाम संस्थान की महत्वपूर्ण भूमिका है। जिसके द्वारा जनमानस का व्यक्तित्व विकास ही नहीं बल्कि उनका आत्मिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास हो रहा है।

निष्कर्ष -

निष्कर्षत:कहा जा सकता है कि सत्य, संयम और समाज के बीच गहरा और अविभाज्य संबंध है। सत्य आत्मबोध का आधार है, संयम उसका व्यवहारिक स्वरूप है और समाज उसका व्यापक विस्तार। जब व्यक्ति सत्य और संयम को अपने जीवन में आत्मसात करता है, तब समाज स्वतः शुद्ध, संतुलित और मानवीय बनता है।

अतः यह कहा जा सकता है, कि सत्य निज नाम संस्थान आधुनिक समाज में सत्य और संयम

ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January-2025 | Page 06-12

के नैतिक मूल्यों को पुनः स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यह संस्थान न केवल व्यक्ति के चरित्र निर्माण में सहायक है बल्कि एक स्वस्थ नैतिक और संतुलित समाज के निर्माण की दिशा में भी सार्थक योगदान प्रदान करता है वर्तमान अध्ययन यह संकेत देता है कि यदि ऐसी संस्थाओं को व्यापक स्तर पर प्रोत्साहन मिले तो भारत की विश्वगुरु वाली गौरवशाली परंपरा बरकरार रहेगी और समाज में नैतिक पुनर्जागरण संभव हो पाएगा।

संदर्भ -

1.बीजक- संत कबीरदास (संपादक: डॉ. श्यामसुन्दरदास)काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।

2.कबीर ग्रंथावली - संत कबीरदास (संपादक: डॉ. श्यामसुन्दरदास) हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद।

3.कबीर (आलोचनात्मक अध्ययन) हजारीप्रसाद द्विवेदी - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

4.द सोशियोलॉजी ऑफ हिंदुइज्म एंड बुद्धिज्म- मैक्स वेबर- आक्सफोर्ड प्रेस,लंदन।

5.सोसायटी एंड कल्चर- राधाकमल मुखर्जी - पीपुल्स पब्लिकेशन।

6.इंडियन सोसाइटी या भारतीय समाज - डॉ.आदित्य प्रकाश-विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

7.भारतीय समाज एवं संस्कृति -डॉ.एस.आर.वर्मा,एसबीपीडी पब्लिकेशन।

8.सत्य निज नाम बोध संस्थान की सोशल मीडिया फेसबुक, इंस्टाग्राम और यूट्यूब पर उपलब्ध जानकारी.

9.नयी दुनिया समाचार पत्र - 12 जुलाई 2019

10.सत्संग और साक्षात्कार में प्राप्त जानकारी।